णामं ठवणा दवियं, भावोत्ति चउव्विहं हवे कम्मं ।
पयडी पावं कम्मं, मलं ति सण्णा दु णाममलं ॥ 52 ॥

- अर्थ—नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव के भेद से कर्म चार तरह का है ।
- इनमें पहला भेद संज्ञारूप है । प्रकृति, पाप, कर्म और मल – ये कर्म की संज्ञाएँ हैं । इन संज्ञाओं को ही नाम निक्षेप से कर्म कहते हैं ॥ 52 ॥

निक्षेपों का प्रयोजन

- अयथार्थ के निवारण के लिए
- यथार्थ प्ररूपणा करने के लिए
- संशय के नाश के लिए
- तत्त्व के अवधारण के लिए

नाम निक्षेप	स्थापना निक्षेप	द्रव्य निक्षेप	भाव निक्षेप
जिस वस्तु में जो गुण नहीं है उसको व्यवहार के लिए उस नाम से कहना	साकार तथा निराकार काठ, पत्थर, चित्राम आदि में “यह वह है” इस प्रकार का अपने परिणामों से निवेश करना	पूर्व या आगामी पर्याय को वर्तमान में कहना	वर्तमान पर्याय सहित वस्तु को कहना
जैसे किसी ने अपने लड़के का नाम महावीर रखा ।	जैसे प्रतिमा में “यह महावीर तीर्थंकर हैं” इस प्रकार संकल्प करना ।	महावीर को गृहस्थादि अवस्था में तीर्थंकर कहना ।	केवलज्ञान हो जाने पर महावीर को तीर्थंकर कहना ।

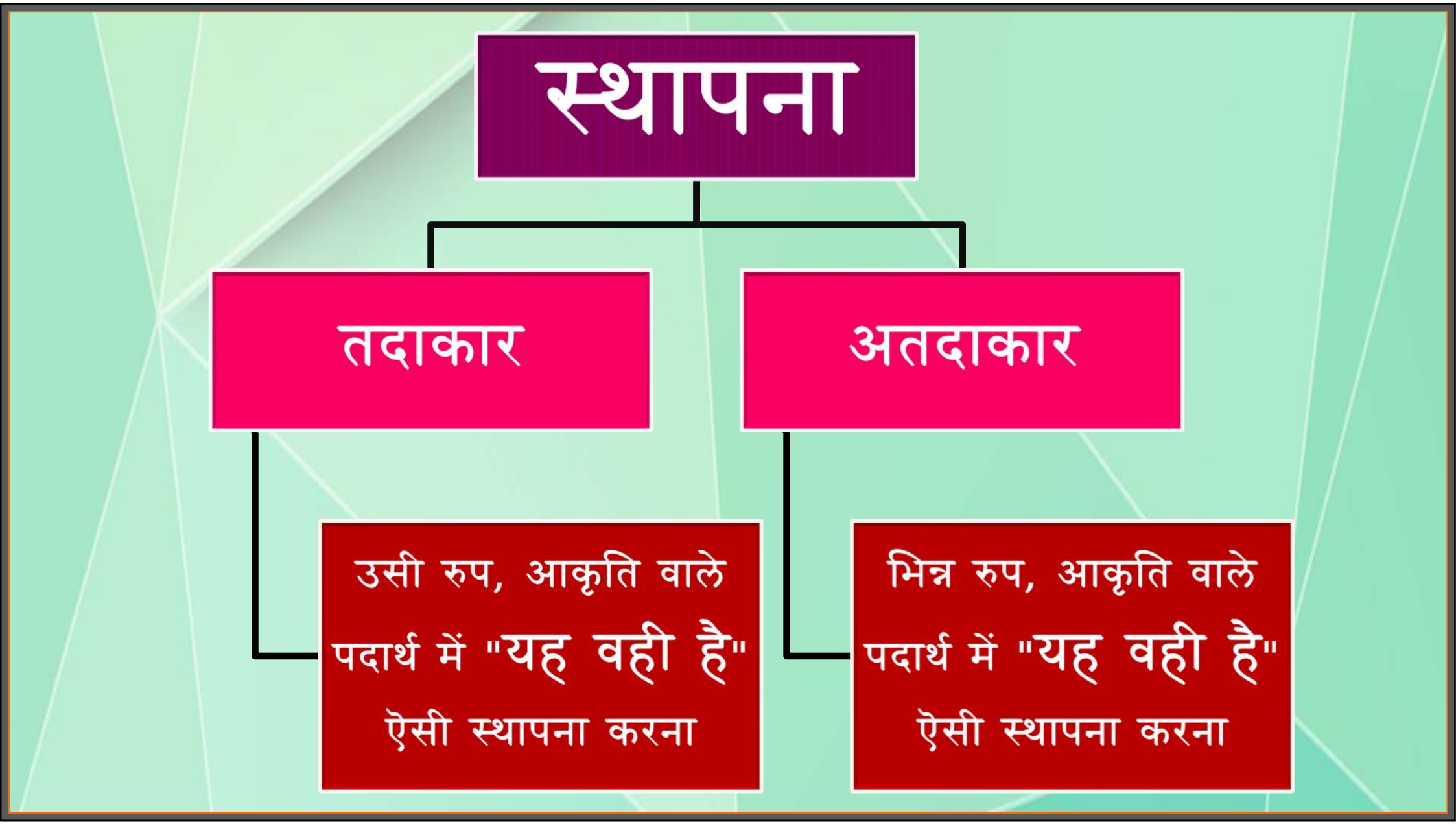
स्थापना
तदाकार
अतदाकार
उसी रुप, आकृति वाले पदार्थ में "यह वही है" ऐसी स्थापना करना
भिन्न रुप, आकृति वाले पदार्थ में "यह वही है" ऐसी स्थापना करना

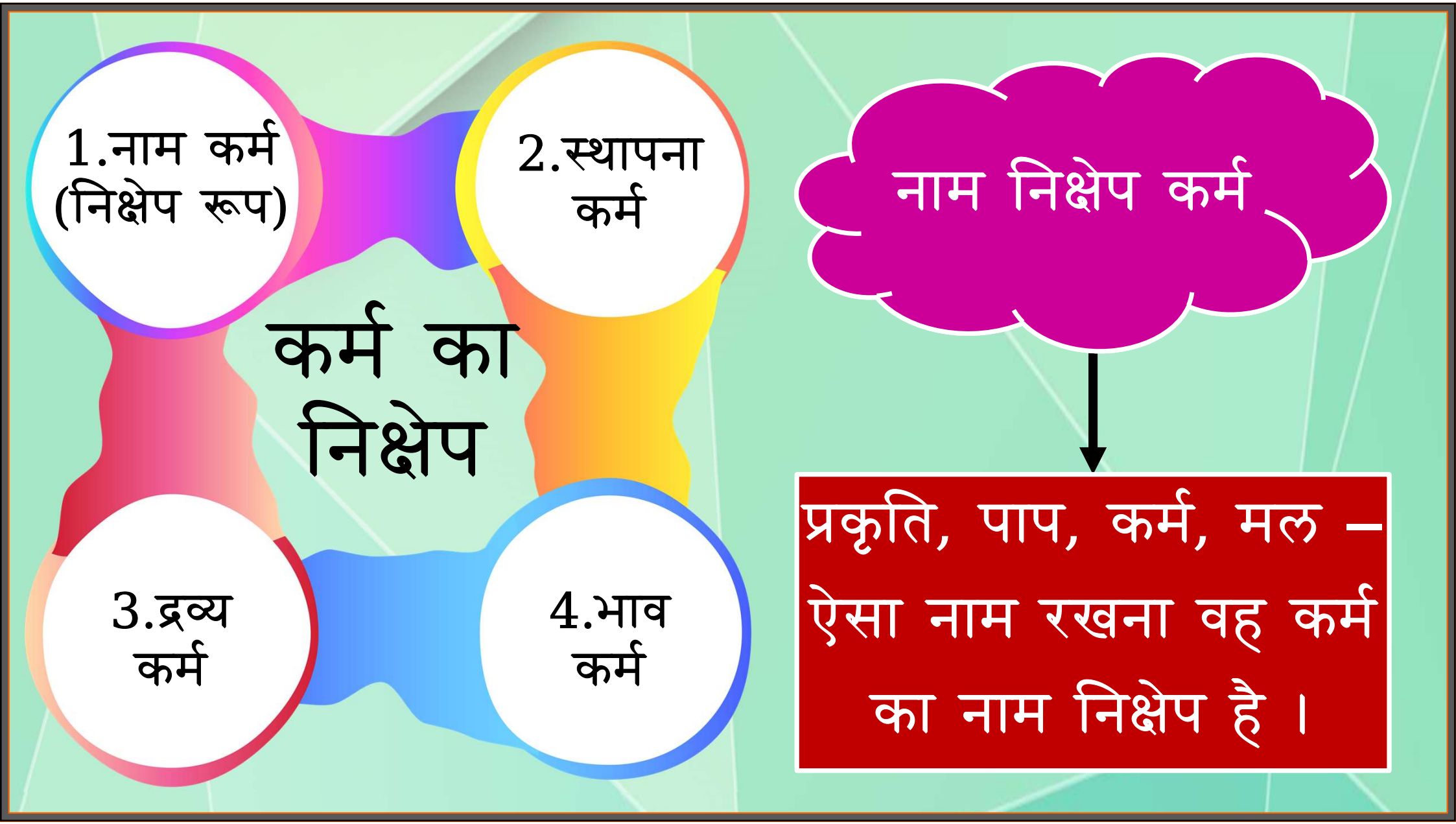

1.नाम कर्म (निक्षेप रूप)
2.स्थापना कर्म
कर्म का निक्षेप
3.द्रव्य कर्म
4.भाव कर्म
नाम निक्षेप कर्म
प्रकृति, पाप, कर्म, मल – ऐसा नाम रखना वह कर्म का नाम निक्षेप है ।

सरिसासरिसे दव्वे, मदिणा जीवट्ठियं खु जं कम्मं ।
तं एदत्ति पदिट्ठा, ठवणा तं ठावणाकम्मं ॥ 53 ॥

- अर्थ—सदृश अर्थात् कर्म सरीखा और असदृश अर्थात् जो कर्म के समान न हो
- ऐसे किसी भी द्रव्य में अपनी बुद्धि से ऐसी स्थापना करना कि "जो जीव में कर्म मिले हुए हैं वे ही ये हैं" – इस अवधानपूर्वक किये गये निवेश को ही स्थापना कर्म कहते हैं ॥ 53 ॥

स्थापना-रूप कर्म

सद्भाव स्थापना	असद्भाव स्थापना
कर्म के सदृश किसी आकृति आदि में	कर्म के असदृश किसी पदार्थ में
‘यह कर्म है’	‘यह कर्म है’
ऐसी स्थापना करना,	ऐसी स्थापना करना,
वह कर्म की सद्भाव स्थापना है ।	वह कर्म की असद्भाव स्थापना है ।

दव्वे कम्मं दुविहं, आगमणोआगमंति तप्पढमं ।
कम्मागमपरिजाणग-जीवो उवजोगपरिहीणो ॥ 54 ॥

- अर्थ—द्रव्यनिक्षेपरूप कर्म दो प्रकार है—एक आगमद्रव्यकर्म, दूसरा नोआगमद्रव्यकर्म ।
- इन दोनों में जो कर्म का स्वरूप कहने वाले शास्त्र का जानने वाला परंतु वर्तमान काल में उस शास्त्र में उपयोग नहीं रखने वाला जीव है वह पहला आगमद्रव्यकर्म है ॥ 54 ॥

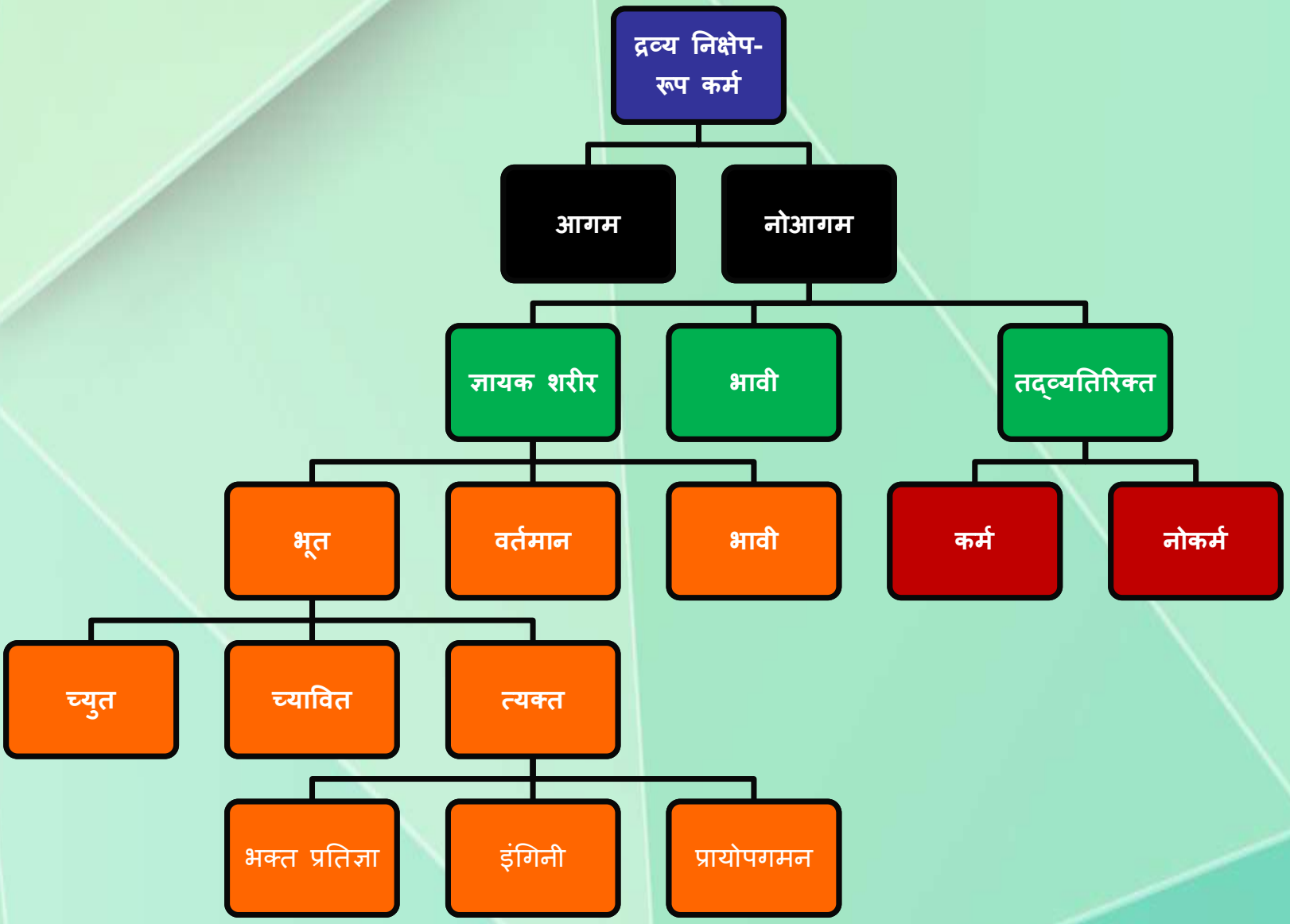
द्रव्य निक्षेप-
रूप कर्म
आगम
नोआगम
ज्ञायक शरीर
भावी
तद्व्यतिरिक्त
भूत
वर्तमान
भावी
कर्म
नोकर्म
च्युत
च्यावित
त्यक्त
भक्त प्रतिज्ञा
इंगिनी
प्रायोपगमन

द्रव्य निक्षेप-रूप कर्म

आगम	नोआगम		
कर्म-शास्त्र को जानने वाला, पर उसके उपयोग से रहित जीव	ज्ञायक शरीर	भावी	तद्व्यतिरिक्त

जाणुगसरीर भवियं, तव्वदिरित्तं तु होदि जं विदियं ।
तत्थ सरीरं तिविहं, तियकालगयंति दो सुगमा ॥ 55 ॥

- अर्थ—दूसरा जो नोआगमद्रव्यकर्म है वह ज्ञायकशरीर, भावि और तद्व्यतिरिक्त के भेद से तीन प्रकार का है ।
- उनमें से ज्ञायकशरीर (कर्मस्वरूप के जानने वाले जीव का शरीर) भूत, वर्तमान, भावी – इस तरह तीन कालों की अपेक्षा तीन प्रकार का है ।
- उन तीनों में से वर्तमान तथा भावी शरीर इन दोनों का अर्थ समझने में सुगम है, कठिन नहीं है । क्योंकि वर्तमान शरीर वह है जिसको धारण कर रहा है और भावी शरीर वह है कि जिसको आगामी काल में धारण करेगा ॥ 55 ॥

ज्ञायक शरीर नोआगम द्रव्य कर्म

(कर्म शास्त्र को जानने वाले जीव का शरीर)

भूत	वर्तमान	भावी
पूर्व का शरीर	अभी का शरीर	भविष्य का शरीर

जो कर्म-शास्त्र को वर्तमान में जानता है, उसका

भूदं तु चुदं चइदं, चदंति तेधा चुदं सपाकेण ।
पडिदं कदलीघाद-परिच्चागेणूणयं होदि ॥ 56 ॥

- अर्थ—भूतज्ञायकशरीर च्युत, च्यावित, त्यक्त के भेद से तीन तरह का है ।
- उनमें जो दूसरे किसी कारण के बिना केवल आयु के पूर्ण होने पर नष्ट हो जाये वह च्युतशरीर है ।
- यह च्युतशरीर कदलीघात (अकालमृत्यु) और संन्यास इन दोनों अवस्थाओं से रहित होता है ॥ 56 ॥

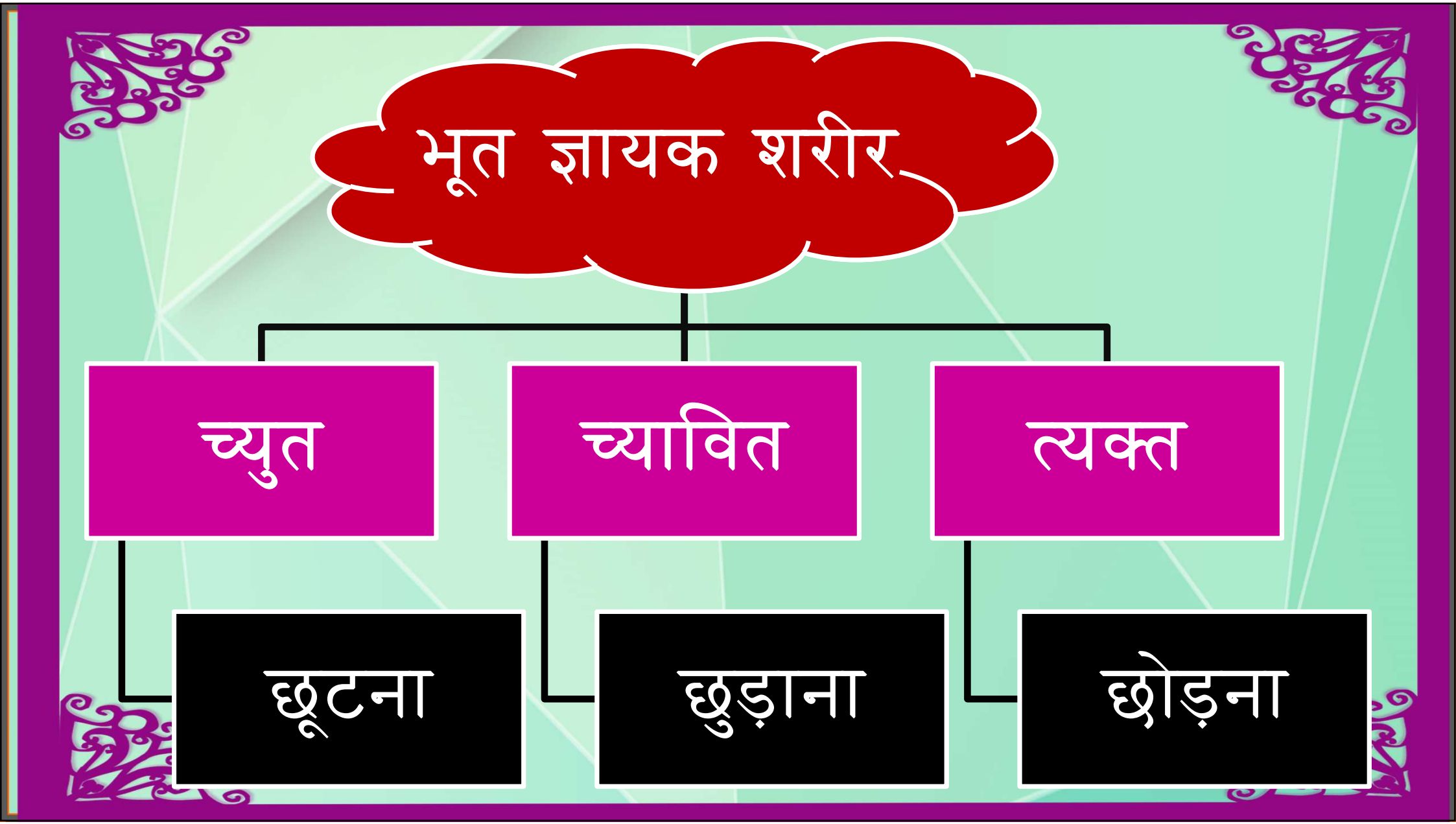
भूत ज्ञायक शरीर
च्युत
च्यावित
त्यक्त
छूटना
छुड़ाना
छोड़ना

विसवेयणरत्तक्खय-भयसत्थग्गहणसंकिलेसेहिं ।
उस्सासाहाराणं, णिरोहदो छिज्जदे आऊ ॥ 57 ॥

- अर्थ—विष भक्षण से अथवा विष वाले जीवों के काटने से, रक्तक्षय अर्थात् रक्त जिसमें सूखता जाता है ऐसे रोग से अथवा धातुक्षय से, भय से, शस्त्रों के घात से, संक्लेश अर्थात् शरीर, वचन तथा मन द्वारा आत्मा को अधिक पीड़ा पहुँचाने वाली क्रिया होने से, श्वासोच्छ्वास के रुक जाने से और आहार नहीं करने से आयु के छिदने को कदलीघात मरण अथवा अकालमृत्यु कहते हैं ॥ 57 ॥

कदलीघात किसे कहते हैं ?

विष

वेदना

रक्तक्षय

तीव्र भय

शस्त्र घात

तीव्र संक्लेश

श्वास का निरोध

आहार का निरोध

आदि कारणों से आयु के छिदने को कदलीघात कहते हैं ।

कदलीघादसमेदं, चागविहीणं तु चइदमिदि होदि ।
घादेण अघादेण व, पडिदं चागेण चत्तमिदि ॥ 58 ॥

- अर्थ—जो ज्ञायक का भूत शरीर कदलीघातसहित नष्ट हो गया हो परंतु संन्यास विधि से रहित हो उसे च्यावितशरीर कहते हैं और
- जो कदलीघातसहित अथवा कदलीघात के बिना संन्यासस्वरूप परिणामों से शरीर छोड़ दिया हो उसे त्यक्त कहते हैं ॥ 58 ॥

भूत ज्ञायक शरीर के प्रकार

	संन्यास सहित मरण	कदलीघात मरण
च्युत	×	×
च्यावित	×	✓
त्यक्त	✓	भजनीय

भत्तपइण्णाइंगिणि-पाउग्गविहीहिं चत्तमिदि तिविहं ।
भत्तपइण्णा तिविहा, जहण्णमज्झिमवरा य तहा ॥ 59 ॥

- अर्थ— भक्तप्रतिज्ञा, इंगिनी और प्रायोग्य की विधि से त्यक्तशरीर तीन प्रकार का है ।
- उनमें भक्तप्रतिज्ञा जघन्य, मध्यम तथा उत्कृष्ट के भेद से तीन तरह की है ॥ 59 ॥

संन्यास मरण

भक्त प्रतिज्ञा

इंगिनी

प्रायोपगमन

जघन्य

मध्यम

उत्कृष्ट

भत्तपइण्णाइविहि, जहण्णमंतोमुहुत्तयं होदि ।
बारसवरिसा जेट्ठा, तम्मज्झे होदि मज्झिमया ॥ 60 ॥

- अर्थ—भक्तप्रतिज्ञा अर्थात् भोजन की प्रतिज्ञा कर जो संन्यासमरण हो उसके काल का प्रमाण जघन्य अन्तर्मुहूर्त है और उत्कृष्ट बारह वर्ष प्रमाण है तथा
- मध्य के भेदों का काल एक-एक समय बढ़ता हुआ है । उसका अंतर्मुहूर्त से ऊपर और बारह वर्ष के भीतर जितने भेद हैं उतना प्रमाण समझना ॥ 60 ॥

भक्तप्रतिज्ञा संन्यास मरण

भक्त = भोजन ।

भोजन की प्रतिज्ञा करके जो संन्यास मरण होता है

वह भक्तप्रतिज्ञा मरण कहलाता है ।

जघन्य काल	मध्यम काल	उत्कृष्ट काल
अन्तर्मुहूर्त	शेष मध्य के विकल्प	12 वर्ष

अप्पोवयारवेक्खं, परोवयारूणमिंगिणीमरणं ।
सपरोवयारहीणं, मरणं पाओवगमणमिदि ॥ 61 ॥

- अर्थ—अपने शरीर की टहल आप ही अपने अंगों से करे, किसी दूसरे से रोगादि का उपचार न करावे, ऐसे विधान से जो संन्यास धारण कर मरण करे उस मरण को इंगिनीमरण संन्यास कहते हैं ।
- जिसमें अपने तथा दूसरे के भी उपचार (सेवा) से रहित हो अर्थात् अपनी टहल न तो आप करे, न दूसरे से ही करावे ऐसे संन्यासमरण को प्रायोपगमन संन्यास कहते हैं ॥ 61 ॥

इंगिनी संन्यास-मरण	प्रायोपगमन संन्यास-मरण
अपने शरीर की टहल (वैयावृत्य, सेवा) स्वयं करे,	अपने शरीर की टहल न स्वयं करे,
अन्य से न करवाये	न अन्य से करवाये
इस प्रकार संन्यास धारण करके मरण करना इंगिनी संन्यास-मरण है ।	इस प्रकार से संन्यास धारण करके मरण करना प्रायोपगमन संन्यास-मरण है ।

संन्यास-मरण में अंतर

संन्यास-मरण	स्वयं वैयावृत्ति	पर से वैयावृत्ति
भक्तप्रतिज्ञा	✓	✓
इंगिनी	✓	✗
प्रायोपगमन	✗	✗

भवियंति भवियकाले, कम्मागमजाणगो स जो जीवो ।
जाणुगसरीरभवियं, एवं होदित्ति णिद्दिट्ठं ॥ 62 ॥

- अर्थ—जो कर्म के स्वरूप को कहने वाले शास्त्र का जानने वाला आगे होगा वह जीव ज्ञायकशरीर भावी है, ऐसा जिनेन्द्रदेव ने कहा है ॥ 62 ॥

भावी नोआगम
(द्रव्य निक्षेपरूप कर्म)

जो जीव

भविष्य में

कर्मस्वरूप के प्रतिपादक शास्त्र को जानेगा,

वह जीव ज्ञायक भावी शरीर है ।

तव्वदिरित्तं दुविहं, कम्मं णोकम्ममिदि तहिं कम्मं ।
कम्मसरूवेणागय, कम्मं दव्वं हवे णियमा ॥ 63 ॥

- अर्थ—तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यकर्म कर्म और नोकर्म के भेद से दो प्रकार है ।
- ज्ञानावरणादि मूलप्रकृतिरूप अथवा उनके भेद मतिज्ञानावरणादि उत्तरप्रकृतिस्वरूप परिणमता हुआ जो कार्मणवर्गणारूप पुद्गल द्रव्य वह कर्म-तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यकर्म है ऐसा नियम से जानना ॥ 63 ॥

कम्मद्दव्वादण्णं, दव्वं णोकम्मदव्वमिदि होदि ।
भावे कम्मं दुविहं, आगमणोआगमंति हवे ॥ 64 ॥

- अर्थ—कर्ममलरूप द्रव्य से भिन्न जो द्रव्य है वह नोकर्म-तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यकर्म है । और
- भावनिक्षेपस्वरूप कर्म आगम तथा नोआगम के भेद से दो प्रकार का होता है ॥ 64 ॥

तद्व्यतिरिक्त नोआगम

ज्ञायक शरीर और भावी से अतिरिक्त

जो कर्म संबंधी द्रव्य निक्षेप है

वह तद्व्यतिरिक्त कहलाता है ।

तद्व्यतिरिक्त नोआगम

कर्म

ज्ञानावरण आदि मूल-उत्तर प्रकृतिरूप परिणमित पुद्गल द्रव्य

नोकर्म

कर्म के उदय द्वारा किए जाने वाले कार्य के लिए बाह्य कारणभूत वस्तु

कर्म का फल उत्पन्न करने में सहायक वस्तु

जैसे क्रोध कर्म के लिए गालियाँ नोकर्म हैं ।

कम्मागमपरिजाणग-जीवो कम्मागमम्हि उवजुत्तो ।
भावागमकम्मोत्ति य, तस्स य सण्णा हवे णियमा ॥ 65 ॥

- अर्थ—जो जीव कर्मस्वरूप के कहने वाले आगम (शास्त्र) का जानने वाला और वर्तमान समय में उसी शास्त्र के चिन्तवन (विचार) रूप उपयोगसहित हो उस जीव का नाम भावागमकर्म अथवा आगमभावकर्म निश्चय से कहा जाता है ॥ 65 ॥

णोआगमभावो पुण, कम्मफलं भुंजमाणगो जीवो ।
इदि सामण्णं कम्मं, चउव्विहं होदि णियमेण ॥ 66 ॥

- अर्थ—कर्म के फल को भोगने वाला जो जीव वह नोआगम भावकर्म है ।
- इस तरह निक्षेपों की अपेक्षा सामान्य कर्म चार प्रकार का नियम से जानना ॥ 66 ॥

भाव निक्षेपरूप कर्म

आगम

कर्म-स्वरूप के प्रतिपादक शास्त्र का वर्तमान में विचार-चिन्तनरूप उपयोगयुक्त जीव

नोआगम

कर्म के फल का भोगने वाला जीव

मूलुत्तरपयडीणं, णामादी एवमेव णवरिं तु ।
सगणामेण य णामं, ठवणा दवियं हवे भावो ॥ 67 ॥

- अर्थ—कर्म की मूलप्रकृति 8 तथा उत्तर प्रकृति 148 हैं । इन दोनों के जो नामादि चार निक्षेप है उनका स्वरूप सामान्य कर्म की तरह समझना । परंतु इतनी विशेषता है कि, जिस प्रकृति का जो नाम हो उसी के अनुसार नाम, स्थापना, द्रव्य तथा भाव निक्षेप होते हैं ॥ 67 ॥

जिस प्रकार कर्म के नाम, स्थापना, द्रव्य, भाव कहे, वैसे ही 8 कर्मों के नाम, स्थापना, द्रव्य, भाव जानना चाहिए ।

- यथा ज्ञानावरण नामरूप निक्षेप, ज्ञानावरण स्थापनारूप निक्षेप आदि ।

इसी प्रकार उत्तर प्रकृतियों के भी नाम, स्थापना आदि निक्षेप जानना ।

- यथा मतिज्ञानावरण नामरूप निक्षेप, मतिज्ञानावरण स्थापनारूप निक्षेप आदि ।

मूलुत्तरपयडीणं, णामादि चउव्विहं हवे सुगमं ।
वज्जित्ता णोकम्मं, णोआगमभावकम्मं च ॥ 68 ॥

- अर्थ—मूलप्रकृति तथा उत्तरप्रकृतियों के नामादिक चार भेदों का स्वरूप समझना सरल है, परंतु उनमें द्रव्य तथा भावनिक्षेप के भेदों में से नोकर्म तथा नोआगमभावकर्म का स्वरूप समझना कठिन है ॥ 68 ॥

अब प्रत्येक मूल कर्म के नोकर्म एवं
नोआगम भाव को पृथक् से बताते हैं ।
शेष निक्षेप सुगम हैं ।

नोकर्म का पूरा नाम —

नोकर्म तद्व्यतिरिक्त नोआगम द्रव्य कर्म

पडपडिहारसिमज्जा, आहारं देह उच्चणीचंगं ।
भंडारे मूलाणं, णोकम्मं दवियकम्मं तु ॥ 69 ॥

- अर्थ—द्रव्यनिक्षेपकर्म का जो एक भेद नोकर्मतद्व्यतिरिक्त है उसी को यहाँ नोकर्म शब्द से समझना ।
- जिस प्रकृति के फल देने में जो निमित्तकारण हो वही उस प्रकृति का नोकर्म जानना ।
- ज्ञानावरणादि 8 मूलप्रकृतियों के नोकर्म द्रव्यकर्म क्रम से वस्तु के चारों तरफ लगा हुआ कनात का कपड़ा, द्वारपाल, शहद लपेटी तलवार की धार, शराब, अन्नादि आहार, उच्च-नीच शरीर, शरीर और भंडारी – ये आठ जानना ॥ 69 ॥

मूल प्रकृतियों के नोकर्म के उदाहरण

ज्ञानावरण	• पट, वस्त्र, आड़ करने वाली वस्तु
दर्शनावरण	• प्रतिहारी
वेदनीय	• शहद लपेटी तलवार 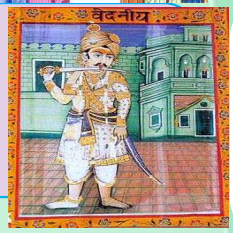
मोहनीय	• मदिरा
आयु	• आहार
नाम	• शरीर
गोत्र	• उच्च-नीच शरीर
अन्तराय	• भंडारी 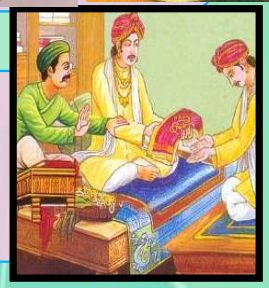

पडविसयपहुदि दव्वं, मदिसुदवाघादकरणसंजुत्तं ।
मदिसुदबोहाणं पुण, णोकम्मं दवियकम्मं तु ॥ 70 ॥

- अर्थ—वस्तुस्वरूप के ढांकने वाले वस्त्र आदि पदार्थ मतिज्ञानावरण के नोकर्म द्रव्यकर्म हैं । और
- इन्द्रियों के रूपादिक विषय श्रुतज्ञान को नहीं होने देते इस कारण वे श्रुतज्ञानावरण कर्म के नोकर्म हैं ॥ 70 ॥

उत्तर प्रकृतियों के नोकर्म

मतिज्ञानावरण

- पट (वस्त्र) आदि मतिज्ञान को रोकने में कारणभूत वस्तु

श्रुतज्ञानावरण

- 5 इन्द्रियों के विषय आदि श्रुतज्ञान को रोकने में कारणभूत वस्तु

क्या-क्या वस्तुएँ मतिज्ञान को रोकने में कारण बनती हैं ?

दीवारें

शरीर

घर

पहाड़

कवर

चमड़ी

5 इन्द्रिय के विषय कैसे श्रुतज्ञानावरण के नोकर्म?

- इन्द्रिय-विषयों में लगने से अन्य पदार्थ का विशेष ज्ञान नहीं हो पाता, मात्र मतिज्ञान हो पाता है ।
- जैसे टी. वी. देखते समय उसी का ज्ञान चलता रहता है, अन्य पदार्थ का ज्ञान नहीं ।
- जैसे ही इन्द्रिय-विषय में उपयोग गया, श्रुतज्ञान का विच्छेद हो जाता है ।
- जैसे प्रवचन सुनते समय
  - किसी पर ध्यान चले जाना
  - किसी पूजन, संगीत में ध्यान खिंच जाना
  - उपयोग घर, दुकान आदि में लग जाना आदि

ओहिमणपज्जवाणं, पडिघादणिमित्तसंकिलेसयरं ।
जं बज्झट्ठं तं खलु, णोकम्मं केवले णत्थि ॥ 71 ॥

- अर्थ—अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान इन दोनों के घात करने का निमित्त कारण जो संक्लेशरूप (खेदरूप) परिणाम उसको करने वाली जो बाह्य वस्तु वह अवधिज्ञानावरण तथा मनःपर्ययज्ञानावरण का नोकर्म है । और
- केवलज्ञानावरण का नोकर्म कोई वस्तु नहीं है क्योंकि केवलज्ञान क्षायिक भाव है । उस केवलज्ञान का घात करने वाले संक्लेश परिणामों का अभाव है ॥ 71 ॥

कर्म	नोकर्म
अवधिज्ञानावरण, मन:पर्ययज्ञानावरण	संक्लेश को पैदा करने वाला बाह्य पदार्थ
केवलज्ञानावरण	कोई नोकर्म नहीं

अवधिज्ञान को घातने का कारण

संक्लेश परिणाम

का कारण

बाह्य वस्तु

यथा 5 इन्द्रिय के भोग, कषाय की कारणभूत वस्तु, भयानक चित्र आदि

केवलज्ञान उत्पन्न होने के बाद

उसके घात का कारण

कोई संक्लेश परिणाम नहीं है ।

अत: उसका नोकर्म नहीं कहा है ।

पंचण्हं णिद्दाणं, माहिसदहिपहुदि होदि णोकम्मं ।
वाघादकरपडादी, चक्खुअचक्खूण णोकम्मं ॥ 72 ॥

- अर्थ—पाँच निद्राओं के नोकर्म भैंस का दही, लहसन, खली इत्यादिक हैं क्योंकि ये निद्रा की अधिकता करने वाली वस्तुएँ हैं ।
- चक्षु तथा अचक्षुदर्शन के रोकने वाले वस्त्र आदि द्रव्य चक्षुदर्शनावरण और अचक्षुदर्शनावरण कर्म के नोकर्म हैं ॥ 72 ॥

दर्शनावरण कर्म के नोकर्म

5 निद्राएँ

- भैंस के दूध का दही, खली, घी आदि

चक्षु-अचक्षु दर्शनावरण

- वस्तु के दर्शन को रोकने वाली बाधाकारी वस्त्र आदि वस्तु

(जैसे मतिज्ञानावरण के नोकर्म कहे, वैसे चक्षु-अचक्षु दर्शनावरण के भी समझ लेना चाहिए ।)

ओहीकेवलदंसण-णोकम्मं ताण णाणभंगो व ।
सादेदरणोकम्मं, इट्ठाणिट्ठण्णपाणादी ॥ 73 ॥

- अर्थ—अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरण का नोकर्म अवधिज्ञानावरण तथा केवलज्ञानावरण के नोकर्म की तरह ही जानना ।
- साता वेदनीय तथा असाता वेदनीय का नोकर्म क्रम से अपने को रुचने वाली तथा अपने को नहीं रुचे ऐसी खाने-पीने आदि की वस्तु जानना ॥ 73 ॥

अवधिदर्शनावरण के नोकर्म

- अवधिज्ञानावरण के समान

केवलदर्शनावरण के नोकर्म

- केवलज्ञानावरण के समान

वेदनीय कर्म के नोकर्म

साता वेदनीय

- इष्ट अन्न, पान आदि

असाता वेदनीय

- अनिष्ट अन्न, पान आदि

कौन-सी वस्तु इष्ट है ? कौन-सी अनिष्ट है ?

क्या पत्नी साता वेदनीय का नोकर्म है या असाता वेदनीय का ?

क्या अपशब्द असाता वेदनीय के नोकर्म हैं या साता वेदनीय के ?

विचार करने पर पायेंगे ये सब हमारी कल्पना के अनुसार नोकर्म बनते हैं, वस्तु इष्ट-अनिष्ट नहीं है ।

हमारी बुद्धि इष्ट-अनिष्ट कल्पना करके सुखी-दुःखी करती है ।

आयदणाणायदणं, सम्मे मिच्छे य होदि णोकम्मं ।
उभयं सम्मामिच्छे, णोकम्मं होदि णियमेण ॥ 74 ॥

- अर्थ—जिन, जिनमंदिर, जिनागम, जिनागम के धारण करने वाले, तप और तप के धारक – ये छह आयतन सम्यक्त्व प्रकृति के नोकर्म हैं ।
- कुदेव, कुदेव का मंदिर, कुशास्त्र, कुशास्त्र के धारक, खोटी तपस्या, खोटी तपस्या के करने वाले – ये 6 अनायतन मिथ्यात्व प्रकृति के नोकर्म हैं ।
- तथा आयतन और अनायतन दोनों मिले हुए सम्यग्मिथ्यात्व दर्शनमोहनीय के नोकर्म हैं । ऐसा निश्चय कर समझना ॥ 74 ॥

नोकर्म

सम्यक्त्व प्रकृति

- जिन
- जिनमंदिर
- जिनागम
- जिनागम के धारक
- तप
- तप के धारक

क्योंकि इन्हीं के विषय में अनेक विकल्प करके चल, मल, अगाढ़ दोष उत्पन्न होते हैं ।

मिथ्यात्व प्रकृति

- कुदेव
- कुदेव का मंदिर
- कुशास्त्र
- कुशास्त्र के धारक
- कुतप
- कुतप के धारक

क्योंकि ये सम्यग्दर्शन के घातक हैं ।

विशेष

इन दोनों नोकर्मों का मिश्रितपना सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति का नोकर्म है ।

जिसे सम्यक्त्व प्राप्त करना है तथा प्राप्त सम्यक्त्व का घात नहीं करना है, वह मिथ्यात्व के नोकर्म से बचे ।

अणणोकम्मं मिच्छत्तायदणादी हु होदि सेसाणं ।
सगसगजोग्गं सत्थं, सहायपहुदी हवे णियमा ॥ 75 ॥

- अर्थ—अनन्तानुबंधी कषाय के नोकर्म मिथ्या आयतन अर्थात् कुदेव आदि छह अनायतन हैं । और
- बाकी बची हुई बारह कषायों के नोकर्म देशचारित्र, सकलचारित्र तथा यथाख्यातचारित्र के घात में सहायता करने वाले काव्य, नाटक, कोक शास्त्र और पापी जार (कुशीली) पुरुषों की संगति करना इत्यादिक हैं । ऐसा नियम से जानना ॥ 75 ॥

कषायों के नोकर्म

अनंतानुबंधी	• मिथ्यात्व के नोकर्म के समान अनायतन
अप्रत्याख्यान	• देशचारित्र
प्रत्याख्यान	• सकलचारित्र
संज्वलन	• यथाख्यात चारित्र

के घातक काव्य नाटक - कोक आदि शास्त्र, पापी पुरुषों की संगति आदि

थीपुंसंढसरीरं, ताणं णोकम्म दव्वकम्मं तु ।
वेलंबको सुपुत्तो, हस्सरदीणं च णोकम्मं ॥ 76 ॥

- अर्थ—स्त्रीवेद का नोकर्म स्त्री का शरीर, पुरुषवेद का नोकर्म पुरुष का शरीर है, और नपुंसकवेद का नोकर्म स्त्री, पुरुष और नपुंसक का शरीर है ।
- हास्यकर्म के नोकर्म विदूषक व बहुरूपिया आदि हैं जो कि हँसी-ठठ्ठा करने के पात्र हैं ।
- रतिकर्म का नोकर्म अच्छा गुणवान् पुत्र है; क्योंकि गुणवान् पुत्र पर अधिक प्रीति होती है ॥ 76 ॥

इट्ठाणिट्ठवियोगं, जोगं अरदिस्स मुदसुपुत्तादी ।
सोगस्स य सिंहादी, णिंदिददव्वं च भयजुगले ॥ 77 ॥

- अर्थ—अरति कर्म का नोकर्मद्रव्य इष्ट का (प्रियवस्तु का) वियोग होना और अनिष्ट अर्थात् अप्रिय वस्तु का संयोग होना है ।
- शोक का नोकर्मद्रव्य सुपुत्र, स्त्री आदि का मरना है ।
- सिंह आदिक भय के करने वाले पदार्थ भयकर्म के नोकर्म द्रव्य हैं । तथा
- निंदित वस्तु जुगुप्सा कर्म की नोकर्मद्रव्य है ॥ 77 ॥

नोकषायों के नोकर्म

स्त्री वेद	• स्त्री का शरीर
पुरुष वेद	• पुरुष का शरीर
नपुंसक वेद	• तीनों वेदोंरूप शरीर
हास्य	• बहुरूपिया, मस्खरा, जोकर आदि
रति	• सुपुत्र-पुत्री आदि
अरति	• इष्ट वियोग, अनिष्ट संयोग
शोक	• सुपुत्रादि का मरण आदि
भय	• सिंह आदि भयकारी वस्तु
जुगुप्सा	• निंदित वस्तु

णिरयायुस्स अणिट्ठाहारो सेसाणमिट्ठमण्णादी ।
गदिणोकम्मं दव्वं, चउग्गदीणं हवे खेत्तं ॥ 78 ॥

- अर्थ—अनिष्ट आहार अर्थात् नरक की विषरूप मिट्टी आदि नरकायु का नोकर्मद्रव्य है ।
- बाकी तिर्यंच आदि तीन आयुकर्मों का नोकर्म इन्द्रियों को प्रिय लगे ऐसा अन्न-पानी आदि है ।
- गति नामकर्म का नोकर्म द्रव्य चार गतियों का क्षेत्र (स्थान) है ॥ 78 ॥

आयुकर्म के नोकर्म

नरक आयु

- अनिष्ट आहार, नरक की विषरूप मिट्टी

तिर्यंच आयु

मनुष्य आयु

देव आयु

इष्ट अन्न-पान आदि पदार्थ

आहार शरीर की स्थिति का कारण है, इसलिए आयु का नोकर्म आहार कहा है ।

णिरयादीण गदीणं, णिरयादी खेत्तयं हवे णियमा ।
जाईए णोकम्मं, दव्विंदियपोग्गलं होदि ॥ 79 ॥

- अर्थ—नरकादि चार गतियों का नोकर्मद्रव्य नियम से नरकादि गतियों का अपना-अपना क्षेत्र है ।
- जातिकर्म का नोकर्म द्रव्येन्द्रियरूप पुद्गल की रचना है ॥ 79 ॥

गति नामकर्म का नोकर्म – चार गतियों का क्षेत्र

नरक गति	• अधोलोक
तिर्यंच गति	• 3 लोक
मनुष्य गति	• मनुष्य लोक
देव गति	• ऊर्ध्व लोक, मध्यलोक, अधोलोक (प्रथम पृथ्वी) • विहार अपेक्षा कुछ कम त्रस नाली का 8/14 भाग

क्योंकि नरक गति आदि पर्यायों का अपने क्षेत्र को छोड़कर अन्यत्र उदय का अभाव है ।

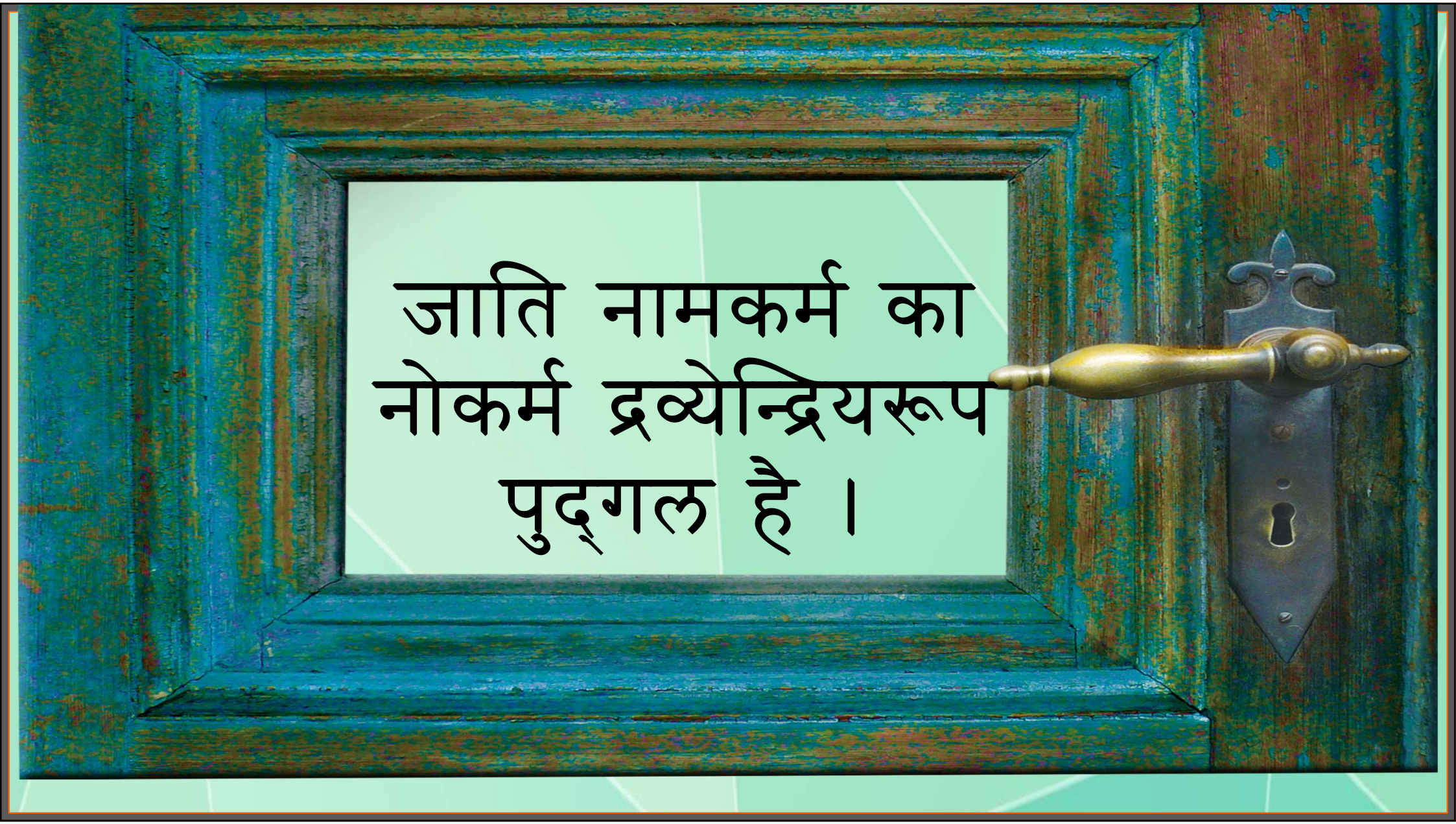
जाति नामकर्म का
नोकर्म द्रव्येन्द्रियरूप
पुद्गल है ।

एइंदियमादीणं, सगसगदव्विंदियाणि णोकम्मं ।
देहस्स य णोकम्मं, देहुदयजदेहखंधाणि ॥ 80 ॥

- अर्थ—एकेन्द्रिय आदिक पाँच जातियों के नोकर्म अपनी-अपनी द्रव्येन्द्रिय है ।
- शरीर नामकर्म का नोकर्मद्रव्य शरीर नामकर्म के उदय से उत्पन्न हुए अपने शरीर के स्कंधरूप पुद्गल जानना ॥ 80 ॥

एकेन्द्रिय जाति	• स्पर्शन द्रव्येंद्रिय
द्वीन्द्रिय जाति	• स्पर्शन, रसना द्रव्येंद्रिय
त्रीन्द्रिय जाति	• स्पर्शन, रसना, घ्राण द्रव्येंद्रिय
चतुरिन्द्रिय जाति	• स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु द्रव्येंद्रिय
पंचेन्द्रिय जाति	• स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण द्रव्येंद्रिय
शरीर नामकर्म	• शरीर स्कन्धरूप पुद्गल

ओरालियवेगुव्विय आहारयतेजकम्मणोकम्मं ।
ताणुदयजचउदेहा, कम्मे विस्संचयं णियमा ॥ 81 ॥

- अर्थ—औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस शरीरनामकर्म का नोकर्मद्रव्य अपने-अपने उदय से प्राप्त हुई शरीरवर्गणा हैं क्योंकि उन वर्गणाओं से ही शरीर बनता है । और
- कार्मणशरीर का नोकर्मद्रव्य विस्रसोपचयरूप (स्वभाव से कर्मरूप होने योग्य कार्मण वर्गणा) परमाणु हैं ॥ 81 ॥

शरीर नामकर्म के नोकर्म

शरीर	नोकर्म	कारण
औदारिक शरीर नामकर्म	अपने-अपने उदय से प्राप्त शरीर वर्गणाएँ	क्योंकि वर्गणाएँ शरीर की कारण हैं ।
वैक्रियिक शरीर नामकर्म		
आहारक शरीर नामकर्म		
तैजस शरीर नामकर्म		
कार्मण शरीर नामकर्म	विस्रसोपचय	क्योंकि विस्रसोपचय कर्म के कारण हैं ।

बंधणपहुदिसमण्णिय-सेसाणं देहमेव णोकम्मं ।
णवरि विसेसं जाणे, सगखेत्तं आणुपुव्वीणं ॥ 82 ॥

- अर्थ—बंधन नामकर्म से लेकर जितनी पुद्गलविपाकी प्रकृतियाँ हैं उनका, और पहले कही हुई प्रकृतियों के सिवाय जीवविपाकी प्रकृतियों में से जितनी बाकी बची उनका नोकर्म शरीर ही है क्योंकि उन प्रकृतियों से उत्पन्न हुए सुखादिरूप कार्य का कारण शरीर ही है ।
- इतना विशेष है कि क्षेत्रविपाकी चार आनुपूर्वी प्रकृतियों का नोकर्मद्रव्य अपना-अपना क्षेत्र ही है ॥ 82 ॥

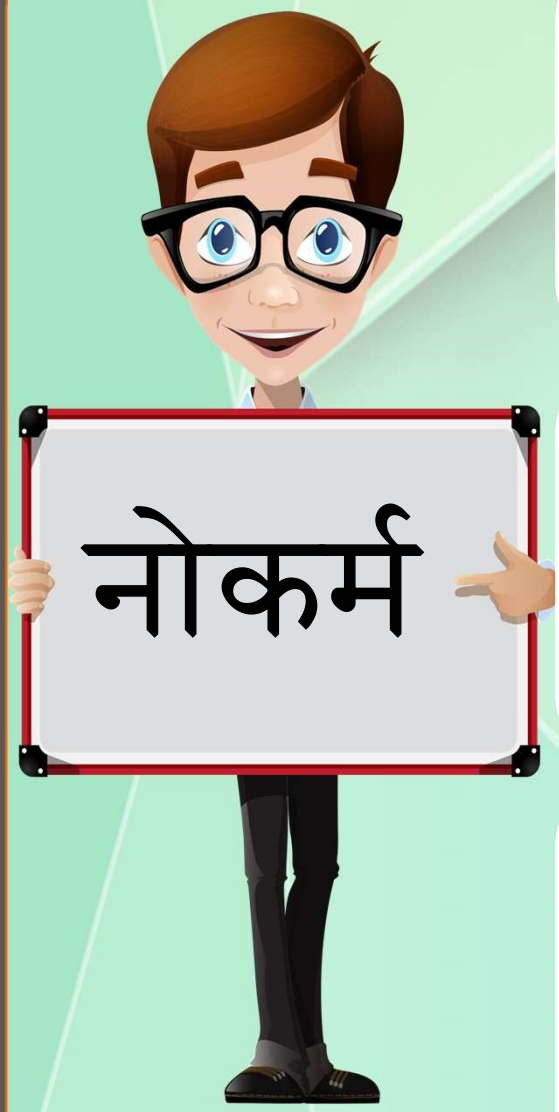

बंधन, संघात आदि पुद्गलविपाकी कर्म

- शरीर

शेष जीवविपाकी नामकर्म

- शरीर

4 आनुपूर्वी कर्म

- अपना-अपना क्षेत्र

थिरजुम्मस्स थिराथिर-रसरुहिरादीणि सुहजुगस्स सुहं ।
असुहं देहावयवं, सरपरिणदपोग्गलाणि सरे ॥ 83 ॥

- अर्थ—स्थिरकर्म का नोकर्म अपने-अपने ठिकाने पर स्थिर रहने वाले रस, रक्त आदि हैं और अस्थिर प्रकृति के नोकर्म अपने-अपने ठिकाने से चलायमान हुए रस, रक्त आदिक हैं ।
- शुभ प्रकृति के नोकर्मद्रव्य शरीर के शुभ अवयव हैं तथा अशुभ प्रकृति के नोकर्मद्रव्य शरीर के अशुभ (जो देखने में सुन्दर न हों ऐसे) अवयव हैं ।
- स्वर नामकर्म का नोकर्म सुस्वर-दुःस्वररूप परिणमे पुद्गल परमाणु हैं ॥ 83 ॥

कर्म	नोकर्म
स्थिर नामकर्म	स्थिर रस, रक्त आदि धातु-उपधातु
अस्थिर नामकर्म	अस्थिर रस, रक्त आदि धातु-उपधातु
शुभ नामकर्म	शुभरूप देह के अवयव
अशुभ नामकर्म	अशुभरूप देह के अवयव
सुस्वर नामकर्म	सुस्वररूप परिणत पुद्गल स्कंध
दु:स्वर नामकर्म	दु:स्वररूप परिणत पुद्गल स्कंध

उच्चस्सुच्चं देहं, णीचं णीचस्स होदि णोकम्मं ।
दाणादिचउक्काणं, विग्घगणगपुरिसपहुदी हु ॥ 84 ॥

- अर्थ—उच्चगोत्र का नोकर्मद्रव्य लोकपूजित कुल में उत्पन्न हुआ शरीर है और नीच गोत्र का नोकर्म लोकनिंदित कुल में प्राप्त हुआ शरीर है ।
- दानादिक चार का अर्थात् दान, लाभ, भोग और उपभोगान्तराय कर्म का नोकर्मद्रव्य दानादिक में विघ्न करने वाले पर्वत, नदी, पुरुष, स्त्री आदि जानने ॥ 84 ॥

नोकर्म

उच्च गोत्र	नीच गोत्र	दान, लाभ, भोग, उपभोग अंतराय
लोकपूजित कुल में उत्पन्न शरीर	लोकनिंदित कुल में उत्पन्न शरीर	विघ्न उपस्थित करने वाले पर्वत, नदी, ऋतु, स्त्री, पुरुष, मल आदि पदार्थ

विरियस्स य णोकम्मं, रुक्खाहारादिबलहरं दव्वं ।
इदि उत्तरपयडीणं, णोकम्मं दव्वकम्मं तु ॥ 85 ॥

- अर्थ—वीर्यांतराय कर्म के नोकर्म रूखा आहार आदि बल के नाश करने वाले पदार्थ हैं ।
- इस प्रकार उत्तरप्रकृतियों के नोकर्म द्रव्यकर्म का स्वरूप कहा ॥ 85 ॥

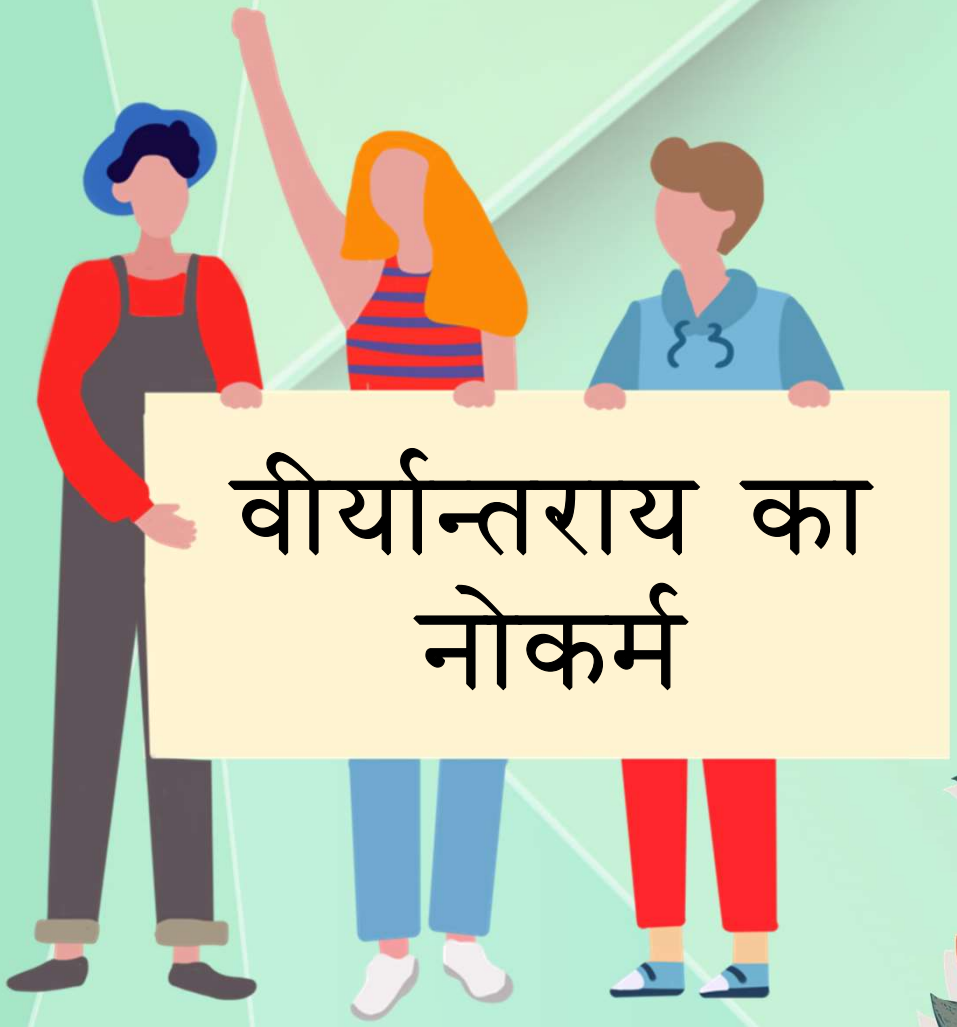

वीर्यान्तराय का नोकर्म

रूखा आहार आदि बल का नाश करने वाली वस्तुएँ

णोआगमभावो पुण, सगसगकम्मफलसंजुदो जीवो ।
पोग्गलविवाइयाणं, णत्थि खु णोआगमो भावो ॥ 86 ॥

- अर्थ—जिस-जिस कर्म का जो-जो फल है उस फल को भोगते हुए जीव को ही उस-उस कर्म का नोआगमभावकर्म जानना ।
- पुद्गलविपाकी प्रकृतियों का नोआगमभावकर्म नहीं होता । क्योंकि उनका उदय होने पर भी जीवविपाकी प्रकृतियों की सहायता के बिना साताजन्य सुखादिक की उत्पत्ति नहीं हो सकती ।
- इस तरह सामान्यकर्म की मूल उत्तर दोनों प्रकृतियों के चार निक्षेप कहे ॥ 86 ॥

नोआगम भाव निक्षेप

अपने-अपने

कर्म के फल को

भोगता हुआ जीव

उस-उस प्रकृति का

नोआगम भाव निक्षेप है ।

पुद्गल-विपाकी प्रकृतियों का नोआगम भाव निक्षेप नहीं है क्योंकि

1) पुद्गल फल का भोक्ता नहीं है ।

2) जीव-विपाकी प्रकृति की सहायता के बिना वह प्रकृति साक्षात् सुख-दुःखादि की उत्पत्ति नहीं कर सकती ।